शर्म! शर्म!! शर्म!!!

नागरिक

26 जनवरी को भारत के गणतंत्र दिवस पर संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा को मुख्य अतिथि के बतौर बुलाकर नरेन्द्र मोदी ने भारत के इतिहास की सबसे बड़ी शर्मनाक घटना को अंजाम दे दिया। यह घटना ऐसी ही है कि इसकी जितनी निंदा की जाये उतनी कम है। जितना इसका विरोघ किया जायें उतना कम है।

बराक ओबामा एक ऐसे देश के राष्ट्रपति हैं जिसमें पिछली एक सदी से भी ज्यादा समय से एक से बढकर एक अपराध किये हैं। जबसे वह एक साम्राज्यवादी देश बना उसने अपने हितों की रक्षा करने व उन्हें आगे बढाने के लिये अनगिनत घृणित काम किये। पूरी बीसवीं सदी इसकी गवाह है। उसने एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका में जबरन युद्ध थोपे। देशों की स्वतंत्रता को कुचला। उनकी सम्प्रभुता की कभी कोई इज्जत नहीं की। मनमाने ढंग से देशों की सरकारों को बदला। ये बातें अब कोई ढंकी-छुपी बातें नहीं हैं। स्वयं स.रा. अमेरिका की बदनाम गुप्तचर संस्था ने कुछ वर्ष पहले स्वीकार किया कि उसने क्या-क्या कुकर्म साठ-सत्तर के दशक में किये और अभी चंद रोज़ पहले आतंकवाद से लड़ने के नाम पर गिरफ़्तार किये गये कैदियों को दी गयी यातनाओं का खुलासा हुआ है। मानवाधिकार के नाम पर कई देशों पर हमला करने वाले बराक ओबामा इन्हें उचित ही ठहरा रहे थे।

बराक ओबामा ने अपने राष्ट्रपति काल में अफगानिस्तान, इराक, पाकिस्तान, लीबिया, सीरिया, सूडान, सोमालिया जैसे कई राष्ट्रों में हज़ारों हजार निर्दोष लोग़ों की हत्यायें की हैं। उन्होंने यूक्रेन सहित पूर्वी यूरोप के कई देशों में ऐसे हालात पैदा करवाये कि वे युद्ध की भूमि बन गये। सही बात अफ्रिका के देशों सूडान, कांगो, माली, मध्य अफ्रकी गणराज्य, नाइजीरिया, सोमालिया आदि के लिए भी सही है।

बराक ओबामा कहने को अश्वेत राष्ट्रपति हैं परन्तु हाल के महीनों में अमेरिका के कई निर्दोष अश्वेत युवकों की खासकर पुलिस द्वारा की गयी हत्यायें इस बात की गवाह है कि उन्होंने अमेरिकी समाज में क्या योगदान दिया है। अपने नागरिकों की गहन निगरानी जिससे स्नो डेन विचलित होकर बागी बन गये यह बतलाने को पर्याप्त है कि ओबामा स्वतंत्रता के कितने घोर विरोधी हैं। वे आम नागरिकों की रत्ती भर भी परवाह नहीं करते हैं। और इससे बढकर वे जर्मनी, फ्रांस जैसे अपने मित्र देशों की न केवल जनता बल्कि राष्ट्राध्यक्षों की भी निगरानी करते हैं। ऐसे व्यक्ति पर भारत की जनता कैसे भरोसा कर सकती है।

बराक ओबामा ने इजरायली शासकों की फिलीस्तीनी जनता को क्रूर दमन पर चुप्पी साधे रखी। ओबामा के शासन काल में इजरायली शासकों ने गाजा पट्टी और वेस्ट बैंक के कई हिस्सों पर और कब्ज़ा किया। कब्ज़े का विरोध करने वाले फिलिस्तीनियों के कत्लेआम की बराक ओबामा ने कभी कोई निंदा नहीं की। और तो और संयुक्त राष्ट्र संघ में अमेरिका ने ऐसी स्थिति पैदा की कि इजरायल पर किसी भी तरह की कार्यवाही न हो सके। इजरायल की मात का तांडव जारी है और उसे अमेरिका से पूरा समर्थन हासिल है।

अपनी गरीबी के दिनों की खूब मार्केटिंग करने वाले ओबामा ने अपने शासन काल में अमेरिका के सट्टेबाज़ों और वित्त कंपनियों को बचाने के लिये अपने खजाने से खूब दौलत लुटायी। 'आक्यूपाई वाल स्ट्रीट' आंदोलन ओबामा की इसी कार्यवाही का एक लोकप्रिय प्रतिरोध था।

ऐसा व्यक्ति जिसके ऊपर देशों की स्वतंत्रता को कुचलने, हज़ारों-हज़ार निर्दोष व्यक्यिों की हत्यायें करवाने, अरबपतियों के हितों की सुरक्षा के लिए किसी भी हद तक जाने, अपने ही देश के नागरिकों की हत्या, निगरानी व जेल में ठूंसने आदि ढ़ेरों अपराध सुस्पष्ट हैं उसे भारत के गणतंत्र दिवस के अवसर पर बुलाने का क्या औचित्य है। क्यों उसे भारत की जनता सलामी दे?

असल में भारत के शासक खासकर नये शासक अमेरिकी साम्राज्यवाद से अपने सभी तरह के रिश्तों को और अधिक प्रगाढ़ बनाना चाहते हैं। वे पहले ही कई तरह के समझौते खुले और गुप्त रूप में अमेरिकी साम्राज्यवाद से कर चुके हैं। कई मामलों में वे इसके घनिष्ठ साझेदार बन चुके हैं। नरेन्द्र मोदी जिन्हें 2002 गुजरात के नरसंहार के बाद अमेरिका का वीजा वर्षों तक नहीं दिया गया अब ओबामा के खास यार हो गये हैं। वे आये दिन नरेन्द्र मोदी की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। और मोदी और उनके समर्थक इसे महान उपलब्धि के रूप में प्रसारित करते हैं। वे मोदी की प्रशंसा में लहालोट हो जाते हैं। इस मामले में वे ओबामा की ईसाई-मुस्लिम पृष्ठभूमि को कभी याद नहीं करते। यद्यपि देश के भीतर 'लव-जिहाद', 'धर्मांतरण' आदि के आधार पर मुस्लिम व ईसाईयों को उन्होंने निशाना बनाया हुआ है।

बराक ओबामा का भारत के गणतंत्र दिवस के दिन आना भारत के पूंजीपति वर्ग जो कि भारत का शासक वर्ग है, के राष्ट्रवाद की अन्त्येनिष्ट भी है। इस राष्ट्रवाद में जो कुछ प्रगतिशीलता थी वह तो दशकों पहले ही चुकने लगी थी अब तो यह घोर प्रतिक्रियावादी चीज़ बन ग्रयी है। यह राष्ट्रवाद अमेरिकी साम्राज्यवाद के सामने नतमस्तक होता है और पड़ौसी पाकिस्तान-बांग्लादेश को आंखे दिखाता है। और देश के भीतर इनके राष्ट्रवाद का मतलब शोषितों-उत्पीड़ितों का दमन है, अल्पसंख्यकों को आतंकित करना है। और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं कों भारतीय राज्य में बनाये रखने के लिए सेना और अर्द्धसैनिक बलों के दम पर किसी भी हद तक जाता है।

बराक ओबामा का भारत के गणतंत्र दिवस के दिन आना भारत के पूंजीपति वर्ग जो कि भारत का शासक वर्ग है, के राष्ट्रवाद की अन्त्येनिष्ट भी है। इस राष्ट्रवाद में जो कुछ प्रगतिशीलता थी वह तो दशकों पहले ही चुकने लगी थी अब तो यह घोर प्रतिक्रियावादी चीज़ बन ग्रयी है। यह राष्ट्रवाद अमेरिकी साम्राज्यवाद के सामने नतमस्तक होता है और पड़ौसी पाकिस्तान-बांग्लादेश को आंखे दिखाता है। और देश के भीतर इनके राष्ट्रवाद का मतलब शोषितों-उत्पीड़ितों का दमन है, अल्पसंख्यकों को आतंकित करना है। और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं कों भारतीय राज्य में बनाये रखने के लिए सेना और अर्द्धसैनिक बलों के दम पर किसी भी हद तक जाता है।

भारत के नये प्रधानमंत्री, उनकी पार्टी, और उनको शिक्षित-दीक्षित करने वाली संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का राष्ट्रवाद अपने जन्म के दिन से प्रतिक्रियावादी और देश को अंधकार में धकेलने वाला है। आज़ादी की लड़ाई के दिनों में इस हिन्दू राष्ट्रवाद के सूत्रधार, प्रवक्ता ब्रिटिश उपनिवेशवादियों की सेवा कर रहे थे। आज़ादी के बाद इनका सारा राष्ट्रवाद मुस्लिम-ईसाई, अल्पसंख्यकों, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं, स्त्रियों-दलितों और मज़दूर वर्ग के ख़िलाफ़ रहा है। कदाचित ओबामा को भारत के गणतंत्र दिवस पर आमंत्रित करके इन्होंने अपने राष्ट्रवाद का असली चरित्र दिखला दिया है। इस राष्ट्रवाद का अर्थ है साम्राज्यवाद और सामंतवाद की सेवा करना। ब्रिटिश उपनिवेशवाद से लेकर अमेरिकी साम्राज्यवाद की सेवा करने का इतना इतिहास इन्हें ऐसा करने का बाध्य करता है और इन्होंने ऐसा ही किया।

प्रधानमंत्री मोदी के ओबामा को गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि बनाये जाने का शासक वर्ग के किसी भी कोने से कोई विरोध न होना और भी खतरनाक बात है। असल में देश को यह सब स्वीकार हो और इसकी आदत पड़ जाये इसकी शुरूआत काफ़ी समय पहले हो चुकी थी। कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में हुये आर्थिक सुधारों के साथ भारत ने साम्राज्यवाद विरोध व दबे-कुचले राष्टों कों समर्थन की औपचारिक नीति को तब से त्यागना शुरू कर दिया था। अब जो हो रहा है वह इसका जारी रूप है।

कुछ वर्ष पहले अमेरिका का कुख्यात राष्ट्रपति जार्ज बुश भारत आया था तब उन्हें लाल किले की प्राचीर से भारत की जनता को समबोधित करवाने की कवायद की गयी थी परन्तु भारी विरोध की सम्भावना को देखते हुए फ़िर दिल्ली के चिड़ियाघर से सटे पुराने किले में देश के तथाकथित गणमान्यों को उन्होंने सम्बोधित किया था। तब एक प्रसिद्ध लेखिका ने गणमान्यों और चिड़ियाघर के जानवरों की तुलना कर एक हंगामाखेज लेख लिखा था। ओबामा को तो जार्ज बुश से ज्यादा सम्मान भारत के नये प्रधानमंत्री द्वारा किया जा रहा है। अब बात यह है कि भारत की जनता जिसने ब्रिटिश उपनिवेशवादियों को भारत की ज़मीन से खदेड़ा था वह इस सबको चुपचाप देखती है अथवा कोई इतिहास में दर्ज होने लायक प्रतिक्रिया भी देती है।

बराक ओबामा और मोदी का यह गठजोड़ वास्तव में साम्राज्यवादी पूंजी और भारत की पूंजी का गठजोड़ है। ऐसा आज के दोर में सम्भव नहीं है कि एक के ख़िलाफ़ मज़दूर वर्ग का आन्दोलन दूसरे के खिलाफ़ लक्षित न हो। अथवा भारत का शासक वर्ग भारत के मज़दूरों-मेहनतकशों पर हमला बोले तो उसे अमेरिकी साम्राज्यवाद का समर्थन न हो।

वक्त आ गया है जिसमें आज भारत के पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष आपस में जुड़ गये हैं। भारत की आज़ादी के लड़ाई के दिनों में यह सम्भव था कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ़ लड़ाई नवोदित भारतीय पूंजीपति वर्ग के खिलाफ़ न बने परन्तु आज ऐसा नहीं है।

गणतंत्र दिवस पर ओबामा का भारत आना हमारी आज़ादी का अपमान है। हमारे लाखों शहीदों की शहादत का अपमान है। और इससे ज्यादा दुर्भाग्य की बात क्या होगी इस सबको करने में भारत के शासकों का पूरा हाथ हैं। भारत के महान हिन्दू राष्ट्रवादी अभी देश को न जाने क्या-क्या दुर्दिन दिखायेंगे।

लव जेहाद के नाम पर आम जनता का ध्यान भटकाना

आजकल लव जेहाद का काफ़ी शोर शराबा मचा है। इसके पीछे कट्टर हिन्दूवादी पूंजीपती वर्ग एवं सरकार का हाथ है। वे आम जनता का ध्यान भटकाकर अपने मन पसन्द नीतियां लागू करवाकर अपनी तिजोरियां भरने का पूरा इंतजाम कर रहे हैं। ज्यादातर ये बताया जाता है कि मुस्लिम समुदाय के लड़के ने, हिन्दू समुदाय की लड़की को बरगलाकर या जोर जबर्दस्ती का कोई भी हथकंडा अपनाकर शादी कर ली है और उसे बंधक बना लिया है।

यह बात हिन्दूस्तान में इसलिए हो रही है क्योंकि वे अपनी संख्या बढ़ाकर पूरी ताकत में आना चाहते हैं जिससे वे हिन्दुस्तान में फ़िर से राज कर सकें। इतना सुनते ही हर कट्टरपंथी हिन्दू गुस्से से उबल जायेगा। और मुस्लिम समुदाय का हर व्यक्ति उसे दुश्मन नज़र आयेगा। और वह उससे भिड़ने की पुरज़ोर कोशिश करेगा। इससे अपने अधिकार भूल जायेगा। अपनी रोटी-रोज़ी को छोड़कर उससे भिड़ने पर आमादा हो जायेगा। और यह कहेगा कि रोटी-रोज़ी, स्वास्थ्य, शिक्षा, मकान, बिजली-पानी इत्यादि को छोड़ो यह तो बाद में देख लेंगे। यदि हमारे समुदाय की बेटी दूसरे समुदाय में गयी तो समझो हमारी इज्जत गयी। यदि इज्जत गयी तो सब कुछ गया। यह सोचकर उनका ध्यान भटका। इधर वे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बुलाकर, श्रम कानूनों में अपने फ़ायदे के हिसाब से बदलाव का कानून पास करवा लेंगे। बिजली, पानी, खाद्यान्न की कीमतों में बढोत्तरी एवं टैक्स इत्यादि, अपने हिसाब से लागू करते जायेंगे।

यदि एक बार को यह मान भी लिया जाय कि कुछ हिन्दू लड़कियों ने मुस्लिम लड़कों से शादी कर ली। लेकिन वहीं पर यह भी देखने को मिलता है। कि मुस्लिम लड़की ने हिन्दू लड़के से शादी की है और दोनों समुदाय में लड़कियां अपने को सुखी व सुरक्षित महसूस कर रही हैं। बल्कि अपने-अपने समुदाय में अधिकतर लड़कियां अपने को सुखी व सुरक्षित महसूस नहीं कर पातीं, उन्हें रोज़-रोज़ प्रताड़ित किया जाता है। कहीं कम दहेज लाने के लिए, कहीं फूहड़पन के लिए, कहीं लड़की जनने के लिए, कहीं बांझ भी कहा जाता है। भले ही शादी के मात्र 2-3 साल हुए हैं। जबकि कहावत है।

भूख न जाने जूठा भात, प्यास न जाने धोबी घाट

नींद न जाने टूटी खाट, इश्क न जाने जात कुजात

लेकिन जो धर्म के ठेकेदार हैं उनका यह भी कहना है कि लड़की की कोई जाति नहीं होती। जिस जाति में उनकी शादी कर दी जाय, उसी जाति की हो जाती हैं। फ़िर भी यदि कोई अपनी इच्छा से दूसरे समुदाय में शादी कर ले तो इन्हें आफ़त आ जाती है। मतलब लड़कियों का अपना कोई वजूद नहीं होता। उनकी कोई इच्छा नहीं होती। जो भी हो इनकी इच्छा होनी चाहिए। यहीं पर यह भी देखने में आता हैं कि हिन्दू धर्म में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को छोड़कर अन्य जातियां जिन्हें धर्म के ठेकेदार नीची जातियां कहते हैं जैसे चमार, पासी, मेहतर, भंगी, चमकटिया इत्यादि के लोग मंदिर में नहीं जा सकते। साथ खड़े नहीं हो सकते, साथ बैठ नहीं सकते, साथ खा नहीं सकते लेकिन कहेंगे अपने को हिन्दू। फिर ये काहे के हिन्दू हुए। हां, वहीं पर उनसे कोई काम लेना है जैसे खेती करना, उत्पादन करवाना, बोझा ढोना और उन तक पहुंचाना चाहे जितनी दिक्कत हो उसे तो कोई परेशानी नहीं होती। यदि उन्हीं जातियों में से कोई लड़की उन्हें पसन्द आ जाये तो उसके व उसके परिवार की इच्छा के विरुद्ध भी उससे सम्बन्ध बनाने में उसके साथ दरिंदगी की हद तक बलात्कार करने में भी कोई गुरेज नहीं करते। यदि उसे अपनी बदनामी के डर से मार भी देते हैं तो भी धर्म के ठेकेदारों को कोई दिक्कत नहीं क्योंकि उनका कहना है कि ब्राह्मण को तो सात खून माफ़ हैं। और तुलसीदास कहते हैं कि 'समरथ को नहीं दोष गुसाईं' यानी सामर्थ्यवान को कोई दोष नहीं होता वे कुछ भी करें। और मुझसे एक व्यक्ति ने बताया कि पहले जो राजा होते थे तो स्वयं राजा व उनका परिवार कुछ भी करे कोई जांच नहीं होती थी। वह उसके अधिकार में आता था।

-अरविन्द बरेली

तुर्की-ब-तुर्की

"काला धन विदेशों से लाकर हर भारतीय परिवार के खाते में 15 लाख रुपये जमा करने का लोकसभा चुनाव प्रचार में प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी का वादा एक चुनावी जुमला था।"

विरोधी दलों की इस चुनौती पर कि मोदी और भाजपा काले धन को लेकर अपना चुनावी वादा पूरा करें, अमित शाह की टिप्पणी:-

हमारा कहना है:-

- सही कहा आपने शाह जी, जनता के मतलब की हर चीज खाए.अघाए राजनीतिकों के लिए जुमला भर ही तो होती है, राष्ट्र का धन और संसाधन तो पूंजीशाहों के लिए तुम लोगों ने आरक्षित कर छोड़ा है, अब तक जनता से किया हर वादा उसे बस उल्लू बनाने के लिए ही तो होता रहा है! एक बार कुर्सी मिल गयी तो चौड़े होकर सत्ता सुख भोगो, जनता जाए भाड़ में, क्यों शाह जी यही तो रही है आप जैसे राजनीतिकों की फ्तिरत।

- लेकिन अब जनता भी आप जैसों से हिसाब बराबर करने में समय गंवाना पसंद नहीं करती। तभी तो दिल्ली विधानसभा चुनाव में उसने तुम्हारी पार्टी को भारतीय जनता पार्टी से भारतीय जुमला पार्टी में बदल डाला तुम्हारे परिधान मंत्री ;प्रधान मंत्री नहीं, मोदी का एक भी पाखण्ड नहीं चला और भाजपाइयों को वो करारी हार नसीब हुयी कि कांग्रेस जैसी बदनसीब पार्टी की बांछें भी खिल गयीं।

- और सुन लो। तुम जैसों के जुमलों का वक्त अब समाप्त हो रहा है। अब बारी है जनता के जुमला बोलने की। आगे हर चुनाव में जनता अपना जुमला बोलेगी। जनता का हर जुमला तुम्हें तुम्हारी औकात दिखाएगा। तुम्हारे जैसों के हर धोखे को नंगा करेगा। पूंजीशाहों की दलाली कर तुम लोग काफी मोटे हो लिए। जनता को धर्मों.जातियों के नाम पर तुमने काफी लड़ा लिया। अब और नहीं, अब अपने किये को भुगतने का वक्त आ गया है तुम जैसों के लिए, दरअसल अब तुम जैसों के लिए जुमलों का नहीं जेलों का वक्त है, बस देखते रहो।